

पंख फसा के पछिताई रे माखी यूँ लोभ में



पंख फसा के पछिताई रे,
माखी यूँ लोभ में,
सिर धुन धुन कर पछिताई रे।bd।

तर्ज - पंख होते उड़ आती रे।

एक दिन मदारी जंगल मे आया,
बानर को दाने का लोभ दिखाया,
सामने उसके रख कर घड़े को,
उसमे कुछ दानो को गिराया,
देखा बानर ने कोई नहीं है,
जा करके अपना हाथ फँसाया,
फँस करके लोभ मे,
सिर धुन धुन कर पछिताई रे,
पंख फँसा के पछिताई रे,
माखी यूँ लोभ में,
सिर धुन धुन कर पछिताई रे।bd।

एक तोते को गुरु ने सिखाया,
फँसा वही जो लालच मे आया,
वन मे शिकारी एक दिन जो आया,
जाल मे पक्षियों को फँसाया,
उन सब मे एक तोता वही था,
जिसने गुरुवाणी को भुलाया,
फँस करके लोभ मे,
सिर धुन धुन कर पछिताई रे,
पंख फँसा के पछिताई रे,
माखी यूँ लोभ में,
सिर धुन धुन कर पछिताई रे।bd।

भजले हरि को ओ मनवा प्यारे,
समझो अपने गुरु के इशारे,
रिश्ते नाते झूठे है सारे,
गुरु बिन कोई न भव से उबारे,
दी जो अमानत तुझको गुरु ने,
उसको जग मे यूँ न लुटा रे,

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी आप अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करे। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>



सिर धुन धुन कर पछिताई रे,
पंख फँसा के पछिताई रे,
माखी यूँ लोभ में,
सिर धुन धुन कर पछिताई रे।bd।

पंख फसा के पछिताई रे,
माखी यूँ लोभ में,
सिर धुन धुन कर पछिताई रे।bd।

– भजन लेखक एवं प्रेषक –
श्री शिवनारायण वर्मा,
मोबा.न.8818932923

वीडियो अभी उपलब्ध नहीं।
